

भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग-1, खंड-1 में प्रकाशनार्थ

फ. स. 6/45/2024-डीजीटीआर

भारत सरकार

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

चौथा तल, जीवन तारा बिल्डिंग, 5, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001

दिनांक: 27 सितंबर, 2025

मामला संख्या: एडी (ओआई) - 42/2024

जांच शुरुआत अधिसूचना

विषय: चीन पीआर में उत्पन्न या निर्यात किए गए "वॉलपेपर" के आयात से संबंधित एक पाटन रोधी जांच की शुरुआत।

1. सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975, समय-समय पर यथा संशोधित (इसके बाद "अधिनियम" के रूप में भी जाना जाता है) और सीमा शुल्क टैरिफ (डंप की गई वस्तुओं पर पाटन रोधी शुल्क की पहचान, मूल्यांकन और संग्रह और क्षति के निर्धारण के लिए) नियम, 1995 के संबंध में, जैसा कि समय-समय पर संशोधित किया गया है (इसके बाद "नियम" या "पाटन रोधी नियम" के रूप में भी जाना जाता है), एक्सिमस वॉलपेपर प्राइवेट लिमिटेड (इसके बाद "आवेदक" या "घरेलू उद्योग" के रूप में भी जाना जाता है) ने नामित प्राधिकारी (इसके बाद " प्राधिकारी" के रूप में भी जाना जाता है) के आयात पर पाटन रोधी शुल्क लगाने की मांग करते हुए एक याचिका दायर की है (इसके बाद "विचाराधीन उत्पाद" या "पीयूसी" या "विषय सामान") के आयात पर पाटन रोधी शुल्क लगाने की मांग की गई है, जो चीन पीआर (इसके बाद "विषय देश" के रूप में संदर्भित) से उत्पन्न या निर्यात किया गया है)।

2. आवेदक ने आरोप लगाया है कि विषय वस्तुओं को डंप की गई कीमतों पर संबंधित देश से भारत में आयात किया जा रहा है और इससे भौतिक क्षति हो रही है और घरेलू उद्योग की स्थापना में भौतिक रूप से बाधा आई है। तदनुसार, आवेदक ने संबंधित देश में उत्पन्न होने वाली अथवा वहां से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया है।

क. विचाराधीन उत्पाद

3. वर्तमान जांच के लिए विचाराधीन उत्पाद वॉलपेपर है, जो पॉलीविनाइल क्लोराइड ("पीवीसी") वॉलपेपर और गैर-बुना वॉलपेपर तक सीमित है।
4. पीवीसी वॉलपेपर एक प्रकार की दीवार को कवर करती है जो पीवीसी लेपित कागज पर डिजाइन प्रिंट करके बनाई जाती है। पीवीसी कोटिंग कागज को साफ करना आसान बनाती है, जिससे यह रसोई, बाथरूम और हॉलवे जैसे क्षेत्रों के लिए उपयुक्त हो जाता है। इसे आमतौर पर गर्म करने के बाद उभरा होता है, जो इसे गहराई और स्पर्श और सजावटी गुणवत्ता देता है।
5. गैर-बुना वॉलपेपर एक प्रकार का दीवार कवरिंग है जो गैर-बुने हुए कागज पर प्रिंट डिजाइनों द्वारा बनाया जाता है। गैर-बुना वॉलपेपर सांस लेने योग्य, आंसू प्रतिरोधी और अधिक टिकाऊ है। गैर-बुना वॉलपेपर स्थापित करने और हटाने में आसान होने के लिए जाना जाता है, क्योंकि यह गीला होने पर फैलता नहीं है और सूखने पर फटता नहीं है, जिससे इसे नीचे की दीवार को नुकसान पहुंचाए बिना स्ट्रिप्स में छील दिया जा सकता है। यह पारंपरिक वॉलपेपर की तुलना में अधिक पर्यावरण के अनुकूल भी है।
6. पीयूसी के दायरे में निम्नलिखित को छोड़कर, केवल पॉलीविनाइल क्लोराइड वॉलपेपर और गैर-बुना वॉलपेपर शामिल हैं:
 - i. **डिजिटल अनुकूलित वॉलपेपर:** डिजिटल अनुकूलित वॉलपेपर एक प्रकार की दीवार कवरिंग है जो उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली डिजिटल छवियों या डिज़ाइनों के साथ वैयक्तिकृत

होती है, जो विशिष्ट स्थानों पर फिट होने के लिए तैयार की जाती है। यह आमतौर पर अद्वितीय, ऑर्डर करने के लिए बनाए गए प्रिंट के लिए बनाया जाता है, जिसमें फोटो, कलाकृति या पैटर्न शामिल हैं, जो असीमित डिजाइन संभावनाएं प्रदान करते हैं। भारत में कई डीलर हैं, जो या तो कच्चे माल यानी बेस पेपर का आयात करते हैं या इसे बेस पेपर के आयातक के माध्यम से प्राप्त करते हैं और डिजिटल प्रिंटर का उपयोग करके बेस पेपर पर डिजाइन प्रिंट करते हैं। उपयोग किए जाने वाले डिजिटल प्रिंटर में आवेदक द्वारा उपयोग की जाने वाली रोटोग्राव्योर तकनीक की तुलना में बहुत धीमी और कम स्याही जमाव दर होती है।

- ii. **प्राकृतिक वॉलपेपर:** प्राकृतिक वॉलपेपर गैर-बुना कागज के शीर्ष पर स्वाभाविक रूप से होने वाले पदार्थों को चिपकाने से बनाया जाता है। सबसे अधिक पाई जाने वाली सामग्री कॉर्क, अभ्रक, लिबास आदि हैं। वे एक शानदार उत्पाद हैं और एक विशिष्ट बाजार का आनंद लेते हैं। चूंकि प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले पदार्थ अद्वितीय होते हैं, इसलिए वे हर उस स्थान को बनाते हैं जिसे वे अद्वितीय दिखने के लिए लागू करते हैं।
- iii. **फैब्रिक-समर्थित वॉलपेपर:** फैब्रिक-समर्थित वॉलपेपर टिकाऊ दीवार कवरिंग होते हैं जिनमें कपड़े के समर्थन से जुड़ी सतह परत होती है, जो आमतौर पर पॉलिएस्टर या कपास से बनी होती है। यह निर्माण इसे अत्यधिक लचीला, आंसू प्रतिरोधी और उच्च यातायात या वाणिज्यिक स्थानों के लिए आदर्श बनाता है। सतह को साफ करना आसान, नमी प्रतिरोधी और धोने योग्य है, जबकि कपड़े का समर्थन ताकत और लचीलापन जोड़ता है, जिससे यह टूट-फूट का सामना कर सकता है। फैब्रिक-समर्थित वॉलपेपर का उपयोग अक्सर कार्यालयों, होटलों या हॉलवे जैसे क्षेत्रों में किया जाता है, जहां स्थायित्व और आसान रखरखाव महत्वपूर्ण होते हैं।

7. आवेदक ने प्रस्तुत किया है कि पॉलीविनाइल क्लोराइड वॉलपेपर और गैर-बुना वॉलपेपर का उपयोग घरों और वाणिज्यिक भवनों में सजावटी उद्देश्यों के लिए किया जाता है।
8. विषय वस्तुओं का सामान्यतः अधिनियम की अनुसूची-I की टैरिफ मद 48142000 और 4814 9000 के अंतर्गत भारत में आयात किया जाता है। उत्पाद का सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और उत्पाद के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है।

उत्पाद नियंत्रण संख्या ("पीसीएन")

9. आवेदक ने निष्पक्ष तुलना के लिए निम्नलिखित उत्पाद नियंत्रण संख्या (पीसीएन) प्रस्तावित की है:

क्र.सं.	प्राचल	प्रकार	पीसीएन कोड
1	वॉलपेपर का प्रकार	पीवीसी वॉलपेपर	पी वी सी
2		गैर बुना वॉलपेपर	एनडब्ल्यू

10. वर्तमान जांच के पक्ष विचाराधीन उत्पाद पर अपनी टिप्पणियां प्रदान कर सकते हैं और जांच शुरू करने की सूचना प्राप्त होने के 15 दिनों के भीतर पीसीएन, यदि कोई हो, का प्रस्ताव कर सकते हैं।

ख. समान वस्तु

11. आवेदक ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सामान विषय देश में उत्पन्न या निर्यात किए गए विषय वस्तुओं की वस्तुओं की तरह हैं। यह कहा गया है कि आवेदक द्वारा उत्पादित विषय वस्तुओं और विषय देश से निर्यात किए गए सामानों में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विषय वस्तुओं की तुलना तकनीकी विशिष्टताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों और टैरिफ वर्गीकरण के संदर्भ में विषय देश से आयातित वस्तुओं से की जा सकती है। आवेदक ने दावा किया है कि दोनों तकनीकी और व्यावसायिक रूप से प्रतिस्थापन योग्य हैं। वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विषय वस्तुओं को विषय देश से आयातित विषय वस्तुओं के लिए " वस्तु " के रूप में माना जाता है।

ग. विषय देश

12. वर्तमान याचिका में विषय देश चीन पीआर है।

घ. जांच की अवधि (पीओआई)

13. प्राधिकारी ने 1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 (12 महीने की अवधि) को जांच की अवधि ("POI") के रूप में माना है। क्षति की अवधि में 1 अप्रैल 2021 से 31 मार्च 2022, 1 अप्रैल 2022 से 31 मार्च 2023, 1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 तक की अवधि और पीओआई शामिल हैं।

ड. घरेलू उद्योग और स्थिति

14. आवेदन एक्सिमस वॉलपेपर प्राइवेट लिमिटेड द्वारा दायर किया गया है। याचिका में यह प्रस्तुत किया गया है कि आवेदक भारत में विषय वस्तुओं का एकमात्र उत्पादक है। इस प्रकार, रिकॉर्ड पर उपलब्ध साक्ष्य के अनुसार, आवेदक का उत्पादन भारतीय घरेलू उत्पादन का 100% है। आवेदक ने आवेदन में यह भी कहा है कि उसने न तो विषय देश से विषय वस्तुओं का आयात किया है और न ही विषय देश में विषय वस्तुओं के किसी उत्पादक/निर्यातक या भारत में विषय वस्तुओं के आयातकों से संबंधित है।
15. रिकॉर्ड पर उपलब्ध जानकारी के आधार पर, प्राधिकारी प्रथम दृष्टया संतुष्ट है कि आवेदक यानी एक्सिमस वॉलपेपर प्राइवेट लिमिटेड पीयूसी के कुल भारतीय उत्पादन का 100% है और इसलिए, एडी नियमों के नियम 2 (बी) के अर्थ के भीतर 'घरेलू उद्योग' का गठन करता है। इसके अलावा, आवेदन नियमों के नियम 5(3) के संदर्भ में खड़े होने की आवश्यकताओं को भी पूरा करता है।

च. कथित डंपिंग का आधार

क. सामान्य मूल्य

16. आवेदक ने दावा किया है कि चीन पीआर को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में माना जाना चाहिए और चीन पीआर के उत्पादकों को यह प्रदर्शित करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए कि पीयूसी के उत्पादन और बिक्री के संबंध में उद्योग में बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति प्रचलित है। जब तक चीन के पीआर उत्पादक यह नहीं दिखाते कि ऐसी बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति बनी रहती है, तब तक उनका सामान्य मूल्य एडी नियमों के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए।

17. आवेदक ने प्रस्तुत किया है कि बाजार अर्थव्यवस्था तीसरे देश में लागत और मूल्य से संबंधित डेटा सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध नहीं है और इसलिए, इसने उचित लाभ मार्जिन के साथ-साथ बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्चों के साथ विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के सर्वोत्तम अनुमानों के आधार पर सामान्य मूल्य का दावा किया है। आवेदक द्वारा दावा की गई सामान्य मूल्य पद्धति पर दीक्षा के उद्देश्य से विचार किया गया है।

ख. निर्यात मूल्य

18. प्राधिकारी ने डीजी सिस्टम डेटा के आधार पर आयात मूल्य पर विचार किया है और आवेदक द्वारा किए गए दावे के अनुसार समुद्री माल ढुलाई, समुद्री बीमा, कमीशन, बैंक प्रभार, बंदरगाह व्यय, अंतर्देशीय माल, लोडिंग और अनलोडिंग शुल्क के कारण मूल्य समायोजन किया गया है।

ग. डंपिंग मार्जिन

19. सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य की तुलना कारखाना-बाह्य स्तर पर की गई है, जो *प्रथम दृष्टया* यह स्थापित करता है कि संबंधित देश से आयातित उत्पाद के संबंध में पाटन माजन *न्यूनतम स्तर* से ऊपर है। इस प्रकार, प्रथम *दृष्टया* इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि संबंधित देश से विचाराधीन उत्पाद को संबंधित देश के निर्यातकों द्वारा भारत में डंप किया जा रहा है।

छ. क्षति और कारण लिंक

20. घरेलू उद्योग को हुई क्षति के आकलन के लिए आवेदक द्वारा दी गई सूचना पर विचार किया गया है। आवेदक ने दावा किया है कि पीयूसी की डंपिंग से इसकी स्थापना को भौतिक क्षति और भौतिक मंदी दोनों हुई हैं। आवेदक ने दावा किया है कि पीओआई के दौरान केवल मामूली गिरावट के साथ, विषय देश से डंप किए गए आयात की मात्रा में क्षति की अवधि में पूर्ण रूप से वृद्धि हुई है, और मुख्य रूप से पीओआई में क्षति की अवधि के दौरान सापेक्ष संदर्भ में महत्वपूर्ण बनी हुई है। विषय आयात घरेलू उद्योग की कीमतों को काफी कम कर रहे हैं। घरेलू उद्योग अपनी क्षमता का इष्टतम स्तर तक उपयोग करने में सक्षम

नहीं है और बहुत कम क्षमता के उपयोग पर काम कर रहा है। डंप किए गए आयात और पीओआई में होने वाले नुकसान के कारण घरेलू उद्योग का मुनाफा काफी कम रहा है।

21. जांच शुरू करने के प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने कथित पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की जांच करने के लिए आवेदक के वास्तविक निष्पादन पर विचार किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विषयगत देश से पाटित आयातों के कारण भारत में घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य मौजूद हैं, जिससे वर्तमान पाटनरोधी जांच शुरू करना उचित है।

ज. पाटन रोधी जांच की शुरुआत

22. घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से विधिवत प्रमाणित लिखित आवेदन के आधार पर, और प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर, विषय देश में उत्पन्न होने वाली या उससे निर्यात की गई वस्तु की डंपिंग, घरेलू उद्योग को नुकसान और इस तरह के कथित डंपिंग और क्षति के बीच कारण संबंध के बारे में खुद को संतुष्ट करने के बाद, और नियमों के नियम 5 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9क के अनुसार, प्राधिकारी, एतद्वारा, विषय देश में उत्पन्न होने वाले या निर्यात किए गए विषय माल के संबंध में किसी भी कथित डंपिंग के अस्तित्व, डिग्री और प्रभाव को निर्धारित करने के लिए एक जांच शुरू करता है और पाटन रोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करता है, जो यदि लगाया जाता है, घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।

झ. प्रक्रिया

23. इस जांच में पाटन रोधी नियमों के नियम 6 में निर्धारित प्रावधानों का पालन किया जाएगा।

अ. जानकारी प्रस्तुत करना

24. सभी संचार ईमेल पते- adv13-dgtr@gov.in, dd16-dgtr@gov.in, dd12-dgtr@gov.in और consultant-dgtr@govcontractor.in पर ईमेल के माध्यम से नामित प्राधिकारी को भेजा जाना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सबमिशन का वर्णनात्मक भाग खोजने योग्य पीडीएफ/एमएस-वर्ड प्रारूप में है और डेटा फाइलें एमएस-एक्सेल प्रारूप में हैं।
25. संबंधित देश में ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, भारत में अपने दूतावास के माध्यम से संबंधित देश की सरकारों, भारत में आयातकों और उपयोगकर्ताओं को जो विषय वस्तुओं से जुड़े होने के लिए जाने जाते हैं, उन्हें अलग से सूचित किया जा रहा है ताकि वे इस आरंभ अधिसूचना में उल्लिखित समय सीमा के भीतर सभी प्रासंगिक जानकारी दर्ज कर सकें। ऐसी सभी जानकारी इस दीक्षा अधिसूचना, एडी नियम, 1995 और प्राधिकारी द्वारा जारी लागू व्यापार नोटिस द्वारा निर्धारित रूप और तरीके से दर्ज की जानी चाहिए।
26. कोई अन्य इच्छुक पक्ष भी इस दीक्षा अधिसूचना में उल्लिखित समय सीमा के भीतर प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए प्रपत्र और तरीके से वर्तमान जांच के लिए प्रासंगिक बना सकता है।
27. कोई अन्य इच्छुक पक्ष भी ऊपर उल्लिखित ईमेल पते पर नीचे दी गई समय-सीमा के भीतर निर्धारित प्रपत्र और तरीके से जांच के लिए प्रासंगिक अपनी प्रस्तुतियाँ कर सकता है।
28. प्राधिकारी के समक्ष कोई भी गोपनीय प्रस्तुतीकरण करने वाले किसी भी पक्ष को अन्य पक्षों को उसी का गैर-गोपनीय संस्करण उपलब्ध कराना आवश्यक है।
29. इच्छुक पार्टियों को यह भी सलाह दी जाती है कि वे इस जांच के संबंध में किसी भी अद्यतन जानकारी के लिए व्यापार उपचार महानिदेशालय (<https://www.dgtr.gov.in/>) की आधिकारिक वेबसाइट पर नियमित रूप से नजर रखें। इच्छुक पार्टियों को निर्देश दिया जाता है कि वे नियमित रूप से डीजीटीआर (<https://www.dgtr.gov.in/>) की वेबसाइट पर जाएं

ताकि वे विषय की जांच में आगे के घटनाक्रमों से अवगत रहें और प्रश्नावली प्रारूपों, पीसीएन पद्धति, पीसीएन चर्चा/बैठक कार्यक्रम, मौखिक सुनवाई की सूचना, शुद्धिपत्र, संशोधन अधिसूचनाओं और ऐसी अन्य जानकारी के संबंध में समय-समय पर जारी किए जा सकने वाले नोटिसों के बारे में सूचित रहें।

ट. समय सीमा

30. वर्तमान जांच से संबंधित कोई भी जानकारी पाटन रोधी नियमों के नियम 6(4) के अनुसार नोटिस प्राप्त होने की तारीख से 30 दिनों के भीतर adv13-dgtr@gov.in, dd16-dgtr@gov.in, dd12-dgtr@gov.in और consultant-dgtr@govcontractor.in ईमेल पते पर नामित प्राधिकारी को ईमेल के माध्यम से भेजी जानी चाहिए। हालांकि, यह नोट किया जा सकता है कि उक्त नियम के स्पष्टीकरण के संदर्भ में, सूचना और अन्य दस्तावेजों के लिए कॉल करने वाली नोटिस को उस तारीख से एक सप्ताह के भीतर प्राप्त माना जाएगा जिस दिन इसे नामित प्राधिकारी द्वारा भेजा गया था या निर्यातक देश के उपयुक्त राजनयिक प्रतिनिधि को प्रेषित किया गया था। यदि निर्धारित समय-सीमा के भीतर कोई सूचना प्राप्त नहीं होती है या प्राप्त जानकारी अधूरी है, तो प्राधिकारी नियमों के अनुसार रिकॉर्ड पर उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने निष्कर्षों को रिकॉर्ड कर सकता है।
31. सभी इच्छुक पार्टियों को सलाह दी जाती है कि वे तत्काल मामले में अपनी रुचि (रुचि की प्रकृति सहित) को सूचित करें और उपरोक्त समय सीमा के भीतर अपनी प्रश्नावली प्रतिक्रिया दाखिल करें।

ठ. गोपनीय आधार पर जानकारी प्रस्तुत करना

32. प्राधिकारी के समक्ष गोपनीय आधार पर कोई गोपनीय प्रस्तुतीकरण करने या सूचना प्रदान करने वाले किसी भी पक्ष को नियमों के नियम 7(2) और इस संबंध में जारी व्यापार नोटिस के अनुसार उसी का एक गैर-गोपनीय संस्करण प्रस्तुत करना आवश्यक है। उपरोक्त का पालन करने में विफलता के कारण प्रतिक्रिया/प्रस्तुतियाँ अस्वीकृत हो सकती हैं।

33. प्रश्नावली के जवाब सहित प्राधिकारी के समक्ष कोई भी सबमिशन (परिशिष्ट/अनुलग्नक सहित) करने वाले पक्षों को गोपनीय और गैर-गोपनीय संस्करण अलग-अलग दाखिल करने की आवश्यकता होती है।
34. "गोपनीय" या "गैर-गोपनीय" सबमिशन को प्रत्येक पृष्ठ के शीर्ष पर "गोपनीय" या "गैर-गोपनीय" के रूप में स्पष्ट रूप से चिह्नित किया जाना चाहिए। इस तरह के अंकन के बिना किए गए किसी भी सबमिशन को प्राधिकारी द्वारा गैर-गोपनीय माना जाएगा, और प्राधिकारी अन्य इच्छुक पार्टियों को इस तरह के प्रस्तुतियों का निरीक्षण करने की अनुमति देने के लिए स्वतंत्र होगा।
35. गोपनीय संस्करण में वह सभी जानकारी होगी जो स्वभाव से गोपनीय और/या अन्य जानकारी होगी जो ऐसी जानकारी के आपूर्तिकर्ता गोपनीय होने का दावा करता है। ऐसी जानकारी के लिए जो प्रकृति से गोपनीय होने का दावा किया जाता है या जिस जानकारी पर अन्य कारणों से गोपनीयता का दावा किया जाता है, जानकारी के आपूर्तिकर्ता को आपूर्ति की गई जानकारी के साथ एक अच्छा कारण विवरण प्रदान करना आवश्यक है कि ऐसी जानकारी का खुलासा क्यों नहीं किया जा सकता है।
36. गैर-गोपनीय संस्करण को गोपनीय जानकारी के साथ गोपनीय संस्करण की प्रतिकृति होना आवश्यक है, अधिमानतः अनुक्रमित या खाली कर दिया गया (यदि इंडेक्सेशन संभव नहीं है) और उस जानकारी के आधार पर संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है जिस पर गोपनीयता का दावा किया जाता है। गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी के सार की उचित समझ की अनुमति देने के लिए गैर-गोपनीय सारांश पर्याप्त विवरण में होना चाहिए। हालांकि, असाधारण परिस्थितियों में, गोपनीय जानकारी प्रस्तुत करने वाली पार्टी यह संकेत दे सकती है कि ऐसी जानकारी सारांश के लिए अतिसंवेदनशील नहीं है, और संक्षेप संभव नहीं होने के कारणों का एक विवरण प्राधिकारी की संतुष्टि के लिए प्रदान किया जाना चाहिए।

37. इच्छुक पार्टियां दस्तावेजों के गैर-गोपनीय संस्करण के प्रसार की तारीख से 7 दिनों के भीतर अन्य इच्छुक पार्टियों द्वारा दावा की गई गोपनीयता के मुद्दों पर अपनी टिप्पणियां दे सकती हैं।
38. प्राधिकारी प्रस्तुत की गई जानकारी की प्रकृति की जांच करने पर गोपनीयता के अनुरोध को स्वीकार या अस्वीकार कर सकता है। यदि प्राधिकारी संतुष्ट है कि गोपनीयता के लिए अनुरोध की आवश्यकता नहीं है या यदि सूचना का आपूर्तिकर्ता या तो जानकारी को सार्वजनिक करने या सामान्यीकृत या सारांश रूप में इसके प्रकटीकरण को अधिकृत करने के लिए तैयार नहीं है, तो वह ऐसी जानकारी की अवहेलना कर सकता है।
39. गोपनीयता के दावे पर एक सार्थक गैर-गोपनीय संस्करण के बिना या एक अच्छे कारण के बयान के बिना किए गए किसी भी सबमिशन को प्राधिकारी द्वारा रिकॉर्ड पर नहीं लिया जाएगा।

ड. सार्वजनिक फ़ाइल का निरीक्षण

40. पंजीकृत इच्छुक पार्टियों की एक सूची डीजीटीआर की वेबसाइट पर अपलोड की जाएगी, साथ ही उनमें से सभी से अनुरोध किया जाएगा कि वे अपनी प्रस्तुतियों/प्रतिक्रिया/सूचनाओं के गैर-गोपनीय संस्करण को अन्य सभी इच्छुक पार्टियों को ईमेल करें। प्रस्तुतियों/प्रतिक्रिया/सूचनाओं के गैर-गोपनीय संस्करण को प्रसारित करने में विफलता के कारण किसी इच्छुक पक्ष को गैर-सहयोगी माना जा सकता है।

ढ. असहयोग

41. ऐसे मामले में जहां कोई इच्छुक पक्ष इस दीक्षा अधिसूचना में प्राधिकारी द्वारा निर्धारित समय के भीतर आवश्यक जानकारी प्रदान करने से इनकार करता है, या अन्यथा आवश्यक जानकारी प्रदान नहीं करता है या जांच में महत्वपूर्ण रूप से बाधा डालता है, प्राधिकारी ऐसे इच्छुक पक्ष को असहयोगी घोषित कर सकता है और उसके पास उपलब्ध तथ्यों के आधार

पर अपने निष्कर्षों को रिकॉर्ड कर सकता है और केंद्र सरकार को ऐसी सिफारिशें कर सकता है जो वह उचित समझे।

सिद्धार्थ-

(सिद्धार्थ महाजन)

निर्दिष्ट प्राधिकारी